Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 08, (जनवरी, 2025)
पृष्ठ संख्या 01–02

बाजरा : कीट एवं रोग प्रबंधन

विनय[1], रोहित यादव[2], एवं राज कुमार यादव[3]

[1](पी.एच.डी. शोधार्थी) मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग,
[2,3]शोधार्थी, आनुवंशिकी और पादप प्रजनन विभाग
नैनी कृषि संस्थान
सैम हिग्गिन बोटोम कृषि तकनीकि एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – doodwalvinay@gmail.com

बाजरे की फसल के लिए खेत की अच्छी तैयारी, उन्नत किस्मों का चुनाव, समय पर बुआई और संतुलित मात्रा में खाद व उर्वरक के उपयोग आदि के साथ साथ फसल में लगने वाले कीट और रोगों का समय पर निदान करना भी अति आवश्यक है, जिससे बाजरे की फसल से अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सके। बाजरे की फसल में लगने वाले कीट और रोग तथा उनके प्रबंधन की जानकारी निम्न प्रकार है।

कीट प्रबंधन

साधारणतया बाजरा की फसल में कीट पतंगों से अधिक नुकसान नहीं होता है लेकिन अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए फसल की कीटों से देखभाल करना आवश्यक है। बाजरा की फसल में निम्न कीटों का प्रायः असर देखा गया है–

दीमक

दीमक के प्रकोप को रोकने के लिए 3–4 लीटर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से क्लोरोपाइरोफॉस का पौधों की जड़ों में छिड़काव करना चाहिए।

तना मक्खी

इसकी गिडारें तथा इल्लियां प्रारंभिक अवस्था में पौधों की बढ़वार को काट देती हैं जिससे पौधा सूख जाता है। इसकी रोकथाम के लिए 1 5 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से फोरेट या 25 कि.ग्रा. फ्युराडान (3 प्रतिशत) दानेदार को खेत में डालना चाहिए।

सफेद लट–

इसके प्रौढ़ भूरे तथा हल्के–भूरे रंग के होते हैं, जो मानसून की पहली वर्षा के बाद भूमि से शाम को अंधेरा होने पर निकलते हैं और आसपास के पौधों पर इकट्ठे होकर पत्तों को खाते हैं एवं सुबह होने से पहले वापिस जमीन में चले जाते हैंद्य इसकी लट अंग्रेजी के अक्षर 'सी' के आकार की होती है। यह सफेद रंग की लट जिसका मुंह भूरे रंग का होता है, बाजरे की जड़ों को काटकर अगस्त से अक्तूबर तक भारी नुकसान करती है। ग्रसित पौधे पीले होकर सूख जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए 0.04 प्रतिशत मोनोक्रोटोफास 36 एस एल या 0. 05 प्रतिशत क्विनलफास 25 ई सी या 0.05 प्रतिशत कार्बारिल 50 डब्ल्यू पी का छिड़काव करें।

तना बेधक

इसका असर पत्तियों पर अधिक होता है तथा बाद में गिडार तने को भी खाती है। इसकी रोकथाम के लिए एक लीटर मोनोक्रोटोफास का 600–800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

मिज

इसका असर प्रायः बालियों के आते समय देखा गया है। इसके साथ–साथ पत्तियों पर खाने वाले कीटों का असर भी दिखाई दे तो 3 प्रतिशत फोरेट को 25 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से धूल छिड़कना चाहिए।

रोग प्रबंधन

हरित बाली रोग :

यह फंफूदी से पैदा होने वाला रोग है इसे मृदुरोमिल आसिता भी कहते हैं। इसके प्रभाव से पत्तियों का रंग पीला पड़ जाता है, पौधों की बढ़वार रूक जाती है। सुबह के समय पत्तियों की निचली सतह पर एक सफेद पाउडर जैसा पदार्थ दिखाई देता है। कभी–कभी प्रभावित पौधों में बालियां नहीं बनती हैं। जब यह बीमारी फसल पर बालियां आने की अवस्था में आक्रमण करती है तो इसे हरी बालियों वाली बीमारी कहते हैं क्योंकि इसमें बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी–छोटी हरी पत्तियां उग आती हैं। खेत में रोगग्रस्त पौधों को समय–समय पर उखाड़ कर जला देना चाहिए। कम से कम तीन वर्ष का फसल चक्र भी रोग को रोकने में सहायक होता है। बोने से पहले बीजों को अप्रोन–35 एस डी या रिडोमील एम जेड–72 से 3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. की दर से उपचारित करें। रोग की व्यापकता को कम करने के लिए रोग के प्रारंभिक लक्षण दिखाई देते ही कवकनाशी रिडोमील एम जेड–72 (2.5 ग्रा./लीटर पानी) से छिड़काव करना चाहिए।

अर्गट

यह बीमारी फसल पर बालियां बनने की अवस्था में नुकसान पहुंचाती है। इस बीमारी के लक्षण के रूप में बालियों पर शहद जैसी चिपचिपी बूंदें दिखाई देती हैं। शहद के समान वाला पदार्थ कुछ दिनों बाद सूखकर गाढ पड़ जाता है इसे अर्गट के नाम से जाना जाता है। अर्गट कटाई के समय खेत की मिट्टी में मिल जाता है और अगले वर्ष भी बाजरा की फसल को नुकसान पहुंचाता है। इसकी रोकथाम के लिए बाजरा की बुवाई जुलाई के पहले पखवाड़े में कर दें ताकि फसल में फूल आने के समय मौसम अधिक नम व ठन्डा न रहे। रोग के प्रकोप को कम करने के लिए कम से कम तीन वर्ष का फसल चक्र अपनाना चाहिए। खेत से रोगग्रस्त बालियों को समय–समय पर काट कर जला देना चाहिए। बीजों में मिले रोगजनक स्केलेरोशिया को दूर करने के लिए बीजों को 10 प्रतिशत नमक के घोल में डालकर अलग कर देना चाहिए। रोग की व्यापकता को कम करने के लिए कवकनाशी बाविस्टीन 1 कि.ग्रा. 1000 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए तथा बीज को बाविस्टीन (2 ग्रा./कि.ग्रा.) से उपचारित करें।

स्मट (कांगियारी)–

बाजरे की बालों की शुरू की अवस्था में जगह जगह रोगग्रस्त दाने बनते हैं, जो आकार में बड़े, चमकदार और गहरे हरे रंग के होते हैं बाद में ये भूरे रंग के हो जाते हैं। अन्त में इनमें काले रंग का पाऊडर सा भर जाता है. जो कि रोगजनक फफूद के बीजाणु होते हैं।